डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन संपन्न

मातृत्व अब गरिमा का विषय – मृदुला गर्ग

महिला लेखन ने अनुभूति की प्रामाणिकता को स्थापित किया है – सुकृता पॉल कुमार

नई दिल्ली, 8 मार्च 2019 । साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आज अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन का आयोजन किया गया। सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात लेखिका मृदुला गर्ग ने कहा कि सहजीवन अभी स्त्री लेखन में प्रमुखता प्राप्त कर रहा है। स्त्री लेखन में छवि बदलने की प्रक्रिया चल रही है। स्त्री अब धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और यहाँ तक कि व्यक्तिगत सभी रूढ़ियों और मान्यताओं के विरुद्ध अधिक प्रतिरोध कर रही है। उत्तर स्त्रीवाद में मातृत्व को एक शक्ति की तरह पहचाना जा रहा है और यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है कि मातृत्व के रूप और रूपक में बड़ा बदलाव आया है। अब सिर्फ संतान उत्पन्न करना ही मातृत्व का लक्षण नहीं रह गया है बल्कि अब शिशु को गोद लिया जा रहा है, दूसरी के कोख को किराए पर लिया जा रहा है, संस्थाओं और गाँव तक को गोद लिया जा रहा है। आशय यह कि अब पोषण करना मातृत्व का गुण बन रहा है। यह न सिर्फ स्त्रियों बल्कि पुरुषों द्वारा भी किया जा रहा है। आगे उन्होंने कहा कि इस प्रकार पुरुष के भीतर भी मातृ तत्त्व आ रहा है। हमारे मिथकों में जिस अर्धनारीश्वर स्वरूप का वर्णन मिलता है उसका वर्तमान समय की इन स्थितियों में यथार्थ देखा जा सकता है। पुरुष के भीतर जब मातृ तत्त्व आ जाता है तब वह उत्पीड़क नहीं रहता बल्कि मित्र हो जाता है। सहजीवन और एकदूसरे के साथ खड़े होना स्त्री लेखन और पुरुष लेखन में बढ़ रहा है। यह बहुत अच्छी स्थिति है और यह एक सहजीवी समाज और देश के लिए आवश्यक भी है।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात अंग्रेजी विद्वान सुकृता पॉल ने वैश्विक परिदृश्य में स्त्री विषयक चिंतन और लेखन के प्रति आश्वस्ति व्यक्त करते हूए कहा कि स्त्रियों ने अपनी भाषा और अपना निजी स्वर स्वयं आविष्कृत किया है। स्त्रियाँ पुरुषों के लेखन को कैसे देखती हैं इस पर गौर करना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्त्री की अनुभूति और अभिव्यक्ति को एकसाथ देखने से पता चलेगा कि स्त्रियाँ किसके बारे में क्या राय रखती हैं और अभी क्या और कैसे कहना शेष है इस पर प्रकाश पड़ेगा। स्त्रियाँ न सिर्फ अपने मुद्दों बल्कि शोषित, पीड़ित और हाशिए के बहिष्कृत समुदायों की समस्याओं को बहुत मानवीय संवेदना के साथ न सिर्फ देख रही हैं बल्कि अपने लेखन में व्यक्त भी कर रही हैं। उन्होंने स्त्रियों के आत्म–विस्थापन की पीड़ा को रेखांकित करते हुए कहा कि यह योंही नही है कि आज स्त्री रचनाकार सीरिया, ईराक और दुनिया के अनेक अस्थिर समाजों के मनुष्यों के बारे में गंभीरता से लिख रही है। आज स्त्री रचनाकार उनके हालात में अपनी स्थिति और अनुभूति पा रही हैं। उन्होंने अनेक कहानियों और उनके रचनाकारों का ज़िक्र करते हुए कहा कि स्त्रीवादी लेखन ने अनुभूति की प्रामाणिकता को स्थापित किया है। स्त्री और पुरुष लिविंग एक्सपीरियंस में बदलाव के लिए सतत प्रयासरत हैं। इससे ही समाज में परिवर्तन घटित होगा और आपसी समझ और विश्वास में इजाफा होगा।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथि लेखिकाओं का स्वागत अंगवस्त्रम् के साथ किया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी स्त्री लेखन को बहुत आशा के साथ देख रही है और पर्याप्त सम्मान देने का प्रयास कर रही है। इसी क्रम में साहित्य अकादेमी द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलनों का आयोजन किया जा रहा है जिससे कि स्त्री लेखन को बड़ा फलक प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं और यह सिफ कहने की बात नहीं है बल्कि स्त्रियों ने इसे साबित करके दिखा दिया है।

द्वितीय सत्र कवि सम्मिलन था जिसकी अध्यक्षता यशोधारा मिश्र ने की। इस सत्र में राका दासगुप्ता (बाङ्ला), सुषमा रानी (डोगरी), लता हिरानी (गुजराती), कल्पना झा (मैथिली), सरिता सिन्हा (मणिपुरी), अमिया कुँवर (पंजाबी), उमा रानी त्रिपाठी (संस्कृत), सी. भवानी देवी (तेलुगु) और तरन्नुम रियाज़ (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

तृतीय सत्र भी कविता–पाठ का था जिसकी अध्यक्षता लक्ष्मी कण्णन ने की। इस सत्र में बिनिता गोयारी (बोडो), रेहाना कौसर (कश्मीरी), योगिनी सातरकर (मराठी), पवित्र लामा (नेपाली), रीता रानी नायक (ओड़िया), सुमन बिस्सा (राजस्थानी) और यशोदा मुर्मु (संताली) ने अपनी कविताएँ सुनाईं। रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का कुछ अंश अपनी मूल भाषा में और उसके बाद उनका हिंदी/अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन संपादक अंग्रेजी स्नेहा चौधुरी ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी मौजूद थे।

ह./–

(के. श्रीनिवासराव)

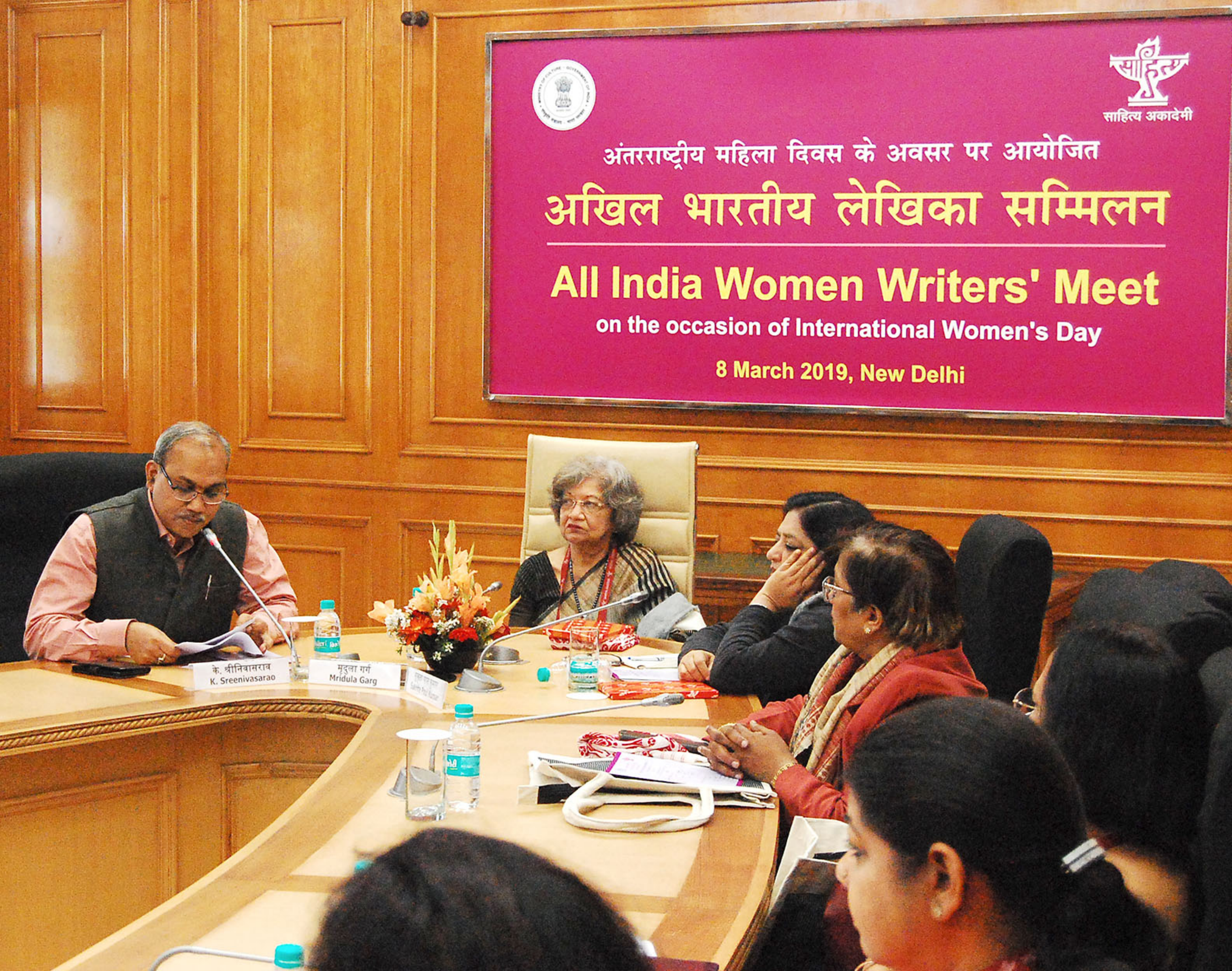
साहित्य अकादेमी
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित
अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन
All India Women Writers' Meet
on the occasion of International Women's Day
8 March 2019, New Delhi
के. श्रीनिवासराव
K. Sreenivasarao
मृदुला गर्ग
Mridula Garg

Meet
ional Women's Day
ew Delhi
SAHITYA AKADEMI

सुकृता पाल कुमार
Sukrita Paul Kuma
मृदुला गर्ग
Mridula Garg

साहित्य अकादेमी
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित
अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन
All In ia Women Writers' Meet
on casi Interna Women
8 h 2019, ni